# Chapter 10

## Envy

I do not know if you have found that fear is a very strange thing. Most of us have fear of some kind or another, and it lurks behind so many forms, it hides behind so many virtues. Without really understanding the cause of fear, the root of fear, all feeling for beauty merely becomes imitative. Without understanding the deeper layers of fear, there is very little significance in the appreciation of beauty. For most of us, the appreciation of beauty is tinged with envy, and so is the desire for beauty. You know what envy is—to be envious of somebody, to be envious of another's capacity, his position, his prestige, the way he looks, the way he walks? For most of us, envy is the basis of our actions; remove envy and we feel we are lost. All our effort is towards success, and in that there is envy; behind that envy there is fear. Fear is the drive, the motive, the spirit, which moves us. Without really understanding the significance of fear and envy, we are only social and moral imitators.

So, I think it is very important to understand this thing we call envy. If you watch your own mind in operation, your own activities, you will find that there is hardly any moment which is not towards something, towards the 'more', towards the greater, towards the desire for wider experience. The moment there is comparison, there must be envy. When I want more, not only of the mundane things, of the worldly things, but also of love, of beauty, of inward richness, the very movement towards the 'more', towards the end, towards the thing which you are going to get, has envy behind it.

## ईर्ष्या

भय कितनी विचित्र चीज़ है, पता नहीं आपने कभी ऐसा महसूस किया है कि नहीं। हममें से अधिकांश किसी-न-किसी प्रकार के भय से ग्रस्त रहते हैं और भय अपने आपको कई रूपों में छिपाए रहता है, यह अनेक सद्‌गुणों की आड़ में छुपा रहता है। भय के कारण को, इसके मूल स्वरूप को ठीक-ठीक समझे बिना सौंदर्य की सारी अनुभूति उथली ही होती है। भय के गहनतर तलों की समझ के बिना सौंदर्य की अनुभूति में कोई गहराई नहीं होती। हममें से अधिकांश लोगों के सौंदर्य-बोध में ईर्ष्या का पुट दिखाई पड़ता है और यही बात सौंदर्य की कामना के मूल में रहती है। क्या आप जानते हैं कि ईर्ष्या क्या है? किसी अन्य के प्रति ईर्ष्यालु होना, दूसरे की योग्यता से ईर्ष्या करना, उसकी प्रतिष्ठा से, वह जिस प्रकार से दिखाई देता है और उसकी चाल से ईर्ष्या करना? हममें से अधिकांश के कार्य ईर्ष्या की नींव पर खड़े होते हैं; ईर्ष्या के हटते ही हम बेसहारा महसूस करने लगते हैं। हमारा सारा प्रयत्न सफलता से प्रेरित होता है और उसमें भी ईर्ष्या छिपी होती है और ईर्ष्या के मूल में भय होता है। भय ही वह स्फूर्ति, वह कारण, वह भाव होता है जो हमें संचालित करता है। भय और ईर्ष्या के वास्तविक अभिप्राय को समझे बिना हम बस सामाजिक और नैतिक स्तर पर नकलची ही बने रहते हैं।

अतः मुझे ऐसा लगता है कि जिसे हम ईर्ष्या कहते हैं उस चीज़ को समझा जाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि आप अपने मन को कार्य करते हुए देखें, अपनी गतिविधियों को देखें, तब आपको पता लगेगा कि शायद ही कोई क्षण ऐसा बीतता है जब आप 'और अधिक' के लिए, और बड़ी चीज़ को पाने के लिए, और बड़े अनुभव को पाने के लिए कोशिश नहीं कर रहे होते। जैसे ही तुलना को महत्त्व दिया जाता है, ईर्ष्या भी आ खड़ी होती है। जब मैं और और की कामना करता हूं, केवल भौतिक चीज़ों या सांसारिक पदार्थों की ही नहीं, बल्कि प्रेम, सौंदर्य और आंतरिक समृद्धि की भी, तो उस 'अधिक' की, उस लक्ष्य की, उस चीज़ की प्राप्ति के प्रयास में ईर्ष्या ही छिपी होती है।

After all, beauty is something not tinged with envy, beauty is something which is, in itself. You do not become more beautiful or more good—which are all the movements of envy. But you have to understand what is, which does not mean you are satisfied with things as they are. The moment you enter into satisfaction and dissatisfaction, there is envy. You can understand the thing as it is, yourself as you are, only when you do not compare because in comparison, there is also envy. To understand what is seems to me to be the real creative beauty of life, and not merely getting somewhere in virtue or in respectability or in power or in position. But all our education, all our thinking, is instinctively towards the 'more', which we call progress.

सौंदर्य तो ऐसा कुछ है जिसमें ईर्ष्या की कोई जगह नहीं होती, सौंदर्य तो परम निरपेक्ष होता है। आप अधिक सुंदर अथवा अधिक अच्छे नहीं हो सकते--यह तो ईर्ष्या ही है जो कि कम या अधिक हो सकती है। आपको चीज़ें जैसी हैं उनको वैसे ही देखना-समझना पड़ेगा--जिसका मतलब यह नहीं है कि जो कुछ भी हो उससे आप संतुष्ट हो जाएं। जैसे ही आप संतुष्टि और असंतुष्टि के चक्कर में पड़ते हैं ईर्ष्या आ जाती है। वस्तुस्थिति जैसी भी है, आप जैसे भी हैं, अपने आपको यथारूप आप केवल तभी समझ सकते हैं जब आप तुलना नहीं करते क्योंकि तुलना करने में ईर्ष्या होती ही है। मुझे तो लगता है कि जीवन का सच्चा सृजनात्मक सौंदर्य 'जो है' उसे समझने में है, न कि केवल किसी सद्गुण को, प्रतिष्ठा को, सत्ता या पद को पाने में। परंतु हमारी समूची शिक्षा, हमारी सारी सोच, मूल रूप से 'और अधिक' की दिशा में ही होती है--जिसे हम प्रगति कहते हैं।

It is, I think, very important to understand this while we are young, while we are not caught in the web of responsibility, of family, of jobs, of position, of activity, of undertakings done blindly and foolishly. Is it not the function of education to free the mind from the comparative? You understand what I mean by that? You see, our education, our social life, our religious aspirations, are all based on this urge for the 'more'—more spiritual life, more happiness, more money, more knowledge, greater virtue—a perfect ideal towards which I go and you go. We are brought up in that atmosphere, and so we never discover what is, what we actually are.

मैं सोचता हूं कि अभी जब हम छोटे ही हैं, जब तक हम परिवार के, नौकरी के, पद-प्रतिष्ठा के, काम-धंधे के तथा अपने अंधेपन में और अज्ञानता में स्वीकार की गयी ज़िम्मेदारियों के बंधन से, उत्तरदायित्व से जकड़े नहीं हैं, इसे समझ लेना बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्या शिक्षा का यह कार्य नहीं है कि मन को तुलनात्मक प्रवृत्ति से मुक्त करे? इससे मेरा क्या तात्पर्य है आप समझ रहे हैं? आप देख सकते हैं कि हमारी शिक्षा व्यवस्था, हमारा सामाजिक जीवन, हमारी धार्मिक आकांक्षाएं, सभी कुछ 'और अधिक' के इसी आग्रह पर टिकी हैं--अधिक आध्यात्मिक जीवन जीना, अधिक खुशी पाना, अधिक धन, अधिक ज्ञान, अधिक अच्छे सद्गुण आदि इकट्ठा करना--ये ही परम ध्येय होते हैं जिन्हें पाने के लिए आप सभी चेष्टा करते हैं। उसी तरह के परिवेश में हम पलते-बढ़ते हैं और इसलिए हम वास्तविकता को, हम सचमुच जो कुछ हैं, उसे कभी नहीं जान पाते।

We are always trying to become something else. We are always trying to become noble, to become a hero, an example, an ideal; and if we really go behind this urge to become, we

हम हमेशा कुछ और बनने की कोशिश में लगे रहते हैं। हम सदैव बेहतर बनने की, आदर्श व्यक्ति बनने की, उदाहरण बनने की, परिपूर्ण बनने की चेष्टा करते रहते हैं और यदि हम विशिष्ट बनने की इस

shall find there is envy, and that behind that envy there is fear, the fear of what one is. So we begin to cover up what we are with all these outward and inward movements which we call progress, which we call 'becoming'. It is very difficult for the mind not to think in terms of becoming, of moving towards the greater, the wider, the more extensive activities, and that movement is based on fear and envy. But there is a totally different movement which is real creativity and real understanding, namely, the movement of the understanding of what is, what you actually are. In that movement, you do not change what is but you understand what is.

कामना की तह में जाएं तो वहां हमें ईर्ष्या ही मिलेगी, और उस ईर्ष्या के मूल में भय मिलेगा, जो मैं हूं उसका भय। इसलिए जो हम हैं उसे हम इन सारी बाहरी और आंतरिक गतिविधियों से--जिन्हें हम प्रगति कहते हैं, जिसे हम कुछ बनना कहते हैं--उससे ढकना शुरू कर देते हैं। मन के लिए यह बहुत कठिन होता है कि वह कुछ बनने की भाषा में न सोचे, कुछ व्यापक व बड़े क्रियाकलापों की ओर न बढ़े, और उसका ऐसा आचरण भय और ईर्ष्या पर ही आधारित हुआ करता है। परंतु आचरण करने का इससे बिलकुल अलग तरीका भी है जो वास्तविक सृजनशीलता और सच्ची समझ है--अर्थात 'जो है' उसे समझने की, आप जो कुछ वस्तुतः हैं उसे समझने की क्रिया। उस क्रिया में आप 'जो है' उसे बदलते नहीं बल्कि उसे समझते हैं।

We are accustomed to think in terms of getting somewhere, of achieving, of succeeding, of changing this into that—of changing violence into nonviolence, which is an ideal. I am inwardly poor, and I want to find those inner riches which are incorruptible. That is the movement we know; in that movement we are brought up, we are nurtured, we are conditioned. In that movement, if you observe, there is envy, there is fear, the fear of not being what one wants to be. The urge to become has created this society, this culture, these religions. Our culture is based on envy. Our religion, as we practice it, as we think of it, as we know it, is the worship of success in a distant future. So, this movement is based on envy, acquisitiveness, and fear.

हम किसी लक्ष्य पर पहुंचने की, कुछ उपलब्ध करने की, सफल होने की, स्थितियों को बदलने की, हिंसा को अहिंसा में बदलने की सोच के आदी हो गए हैं--अहिंसा जो कि एक आदर्श मात्र है। अपने भीतर तो मैं दरिद्र हूं पर उन आंतरिक समृद्धियों को पाना चाहता हूं जिन्हें कभी अपवित्र किया जाना असंभव है। अभी हम इसी प्रक्रिया से परिचित हैं, उसमें ही पले-बढ़े हैं, उसमें ही हमारा पालन-पोषण हुआ है, उसमें ही संस्कारित किए गए हैं। यदि आप ध्यान से देखें तो उस प्रक्रिया में ईर्ष्या है, भय है, व्यक्ति जो बनना चाहता है वह न बन पाने की आशंका है। कुछ बनने, होने की चाह ने ही इस समाज को, इस संस्कृति को, और इन सारे धर्मों को निर्मित किया है। हमारी संस्कृति ईर्ष्या की नींव पर टिकी है। अभी हम जिस तरह के धर्म का पालन करते हैं, जैसा सोचते और जानते हैं, वह किसी सुदूर भविष्य में मिल सकने वाली सफलता की पूजा मात्र है। इसलिए यह सारी प्रक्रिया ईर्ष्या, लोभ और भय पर आधारित है।

Is it not the function of education to break up that movement and to bring about a totally different activity which is the understanding of what is, as one actually is? In this activity, there is no fear, there is no envy, no desire to become something. This activity is the initiative of the thing

क्या शिक्षा का यह कार्य नहीं है कि उस प्रक्रिया का अंत करे और इससे बिलकुल भिन्न एक ऐसी गतिविधि को अस्तित्व में लाए जो वास्तविकता की समझ पर, हम जो कुछ भी वास्तव में हैं उसकी समझ पर आधारित हो? इस गतिविधि में भय नहीं होगा, ईर्ष्या नहीं होगी, कुछ बनने की कामना नहीं होगी। यथार्थ जैसा भी है, यह गतिविधि उसको

as it is.

समझने की शुरुआत होगी।

The movement of envy leads to utter discontent and disintegration. Let me put it very simply. I am aggressive, violent, and I am told from childhood that I must change that, that I must become nonviolent, nonaggressive, that I must have love. All this is a movement towards changing what is, and that movement is based on envy, on fear because I want to change 'what I am' into something else. But if I see the truth of that movement which is envy and in which there is fear, then I can see what I am. When I see I am aggressive, I do not change 'what I am', but I watch the movement of aggression. In that watching, there is no fear, there is no compulsion. The very watching of 'what I am' brings about a totally different activity. That is surely the function of education; that is creation.

ईर्ष्या की गतिविधि तीखे असंतोष और विखंडन की ओर ले जाती है। लीजिए मैं इसे और सरल शब्दों में बताता हूं। मैं आक्रामक प्रवृत्ति का हूं, हिंसक हूं और बचपन से ही मुझे यह सिखाया जाता रहा है कि मुझे इस स्थिति को बदलना होगा और मुझे अहिंसक, अनाक्रामक प्रवृत्ति वाला बनना होगा, मुझे प्रेमपूर्ण होना होगा। यह सारी गतिविधि 'जो है' उसे बदलने की दिशा में किया जाने वाला प्रयास है और ईर्ष्या पर, भय पर आधारित है, क्योंकि जो मैं हूं उसे मैं किसी और चीज़ में बदलना चाहता हूं। परंतु यदि मैं उस गतिविधि की, जो कि ईर्ष्या और भय है, वास्तविकता को देख लेता हूं तब मैं अपने आपको, जो मैं हूं उसको देख सकता हूं। जब मैं देखता हूं कि मैं आक्रामक हूं तो मैं 'जो मैं हूं' उसे बदलता नहीं, बल्कि मैं आक्रामकता की गतिविधि का ध्यान से अवलोकन करता हूं। उस अवलोकन में भय नहीं होता, बाध्यता नहीं होती। 'जो मैं हूं' का अवलोकन ही एक सर्वथा भिन्न गतिविधि को अस्तित्व में लाता है। अवश्य ही, शिक्षा का यह कार्य है, यही सृजन है।

Creative activity requires a great deal of perception, insight, and understanding. Because, it does not emphasize the self-centred activity of the mind. At present, all our activities emphasize self-centredness, from which spring our social and economic difficulties and miseries. All of us can observe these two movements in ourselves. In the observation of the two, there is the dropping away of all activity based on fear and envy, and there is only the other activity which is creative, in which there is initiative and beauty.

सृजनात्मक गतिविधि के लिए प्रत्यक्ष दर्शन, अंतर्दृष्टि और समझ का होना आवश्यक है। क्योंकि ऐसी गतिविधि मन की स्व-केंद्रित क्रिया को महत्त्व नहीं देती। वर्तमान में हमारी सारी गतिविधियां स्व-केंद्रित होने को महत्त्व देती हैं और उनसे ही हमारी सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयां तथा कष्ट जन्म लेते हैं। हम सभी अपने भीतर इन दोनों गतिविधियों का अवलोकन कर सकते हैं। और जब इन दोनों गतिविधियों का अवलोकन किया जाता है तो उनमें से एक, जो कि भय और ईर्ष्या की नींव पर खड़ी होती है, सरलता से छूट जाती है और केवल दूसरी गतिविधि जो कि सृजनात्मक गतिविधि होती है, शेष रह जाती है। उसी में स्वप्रेरणा और सौंदर्य होता है।